कोविड–19 के दौरान शिक्षकों से संवाद

– विपिन चौहान

अलसुबह ही राजकीय प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक रामशरण जी को सूचना मिली कि उन्हें आज दोपहर 12 बजे से शाम 6 बजे तक एयरपोर्ट पर डयूटी देनी है और एयरपोर्ट पर आने वाले यात्रियों की स्क्रीनिंग, टेस्ट रिपोर्ट का वेरिफिकेशन, आगमन व गंतव्य का स्थान जैसे अनेकों सूचनाओं का संकलन करना है। वो कुछ पल के लिए असमंजस में पड़ गए कि आज तो उन्हें गणित विषय पर चल रहे कोर्स में भी प्रतिभाग करना है। दोनों में बदलाव की कोई गुंजाईश नहीं तो रामशरण जी ने तय किया कि जैसे भी हो कोर्स में तो प्रतिभाग करना ही है। सत्र का समय हुआ तो उन्होंने दोनों कान में इयरफोन लगा कर बखूबी दोनों जिम्मेदारियां निभायी। बीच–बीच अपनी बात व प्रश्न भी रखे। रामशरण जी ने छह सत्र जो कि छह अलग अलग दिनों में थे, में से पांच सत्रों में बड़ी ही तन्मयता से भाग लिया। एक सत्र में नेटवर्क क्षेत्र से बाहर होने के चलते वह नहीं जुड़ पाए।

रामशरण जी ने जिस शिद्दत के साथ इन सत्रों में भाग लिया है वो काबिल–ए–तारीफ बात है जो उनके शिक्षा से जुड़े सरोकारों की ओर सीधे–सीधे इशारा करती हैं। यह बड़ी ही प्रोत्साहित करने वाली बात है कि उत्तराखंड में रामशरण जी जैसे हजारों शिक्षक मौजूद हैं जो इन कोर्सेस में उत्साह से जुड़ते हैं। यह कोर्सेस अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के जिला/ब्लॉक स्तरीय विषय–विशेषज्ञों द्वारा वर्चुअल मोड़ में लॉकडाउन के शुरुआती दोनों से आयोजित किये जा रहे हैं। इस तरह के कोर्स, सैकड़ों की तादाद में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा उत्तराखंड, राजस्थान, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, पुदुचेरी और तेलंगाना में लगातार आयोजित किये जा रहे हैं।

हालांकि इसकी शुरुआत शिक्षकों के साथ वर्चुअल मोड़ में लॉकडाउन की शुरुआत के साथ ही, एक दूसरे की खैर खबर लेने के साथ शुरू हुई थी, लेकिन इसकी शुरुआत के एक–दो सप्ताह के दौरान ही कुछ शिक्षकों ने कुछ अकादमिक बातचीत करने का प्रस्ताव भी रख दिया। और शुरुआत हुई शिक्षकों द्वारा स्वयं के अनुभव साझा करने के साथ। हर कॉल, जो कि दो–तीन दिन के अंतराल पर होती थी, में कोई एक शिक्षक स्वयं के अनुभव रखते और इस पर कुछ सवाल–जवाब होते। इस तरह यह दौर कुछ दिनों तक चला और फिर इसके साथ–साथ शुरुआत हुई कुछ विशेषज्ञों से सीधे बातचीत की, यथा कोविड–19 में कैसे अपना व् अपनों का ख्याल रखें, संभावित मनोवैज्ञानिक समस्याओं से कैसे निबटें आदि। चर्चाएं चलती गयी और नए–नए विचार भी जुड़ते गए और फिर शुरुआत हुई कक्षा–कक्षीय विषयों से जुडी विषय–वस्तुओं पर। लगभग दो महीने के अंतराल में ये चर्चाएं अलग–अलग जिलों में अलग–अलग रूपों में नजर आने लगी कहीं अल्प अवधि के कोर्स के रूप में तो कहीं वेबिनार के रूप में, कहीं अनुभव शेयरिंग के तौर पर तो कहीं पढ़ने–लिखने के 'सृर्जन समूह' के तौर पर। इस तरह यह कारवां शुरू हुआ और चलता ही गया और आज भी उसी ऊर्जा के साथ जारी है।

उत्तराखंड में इस अवधि के दौरान (23 मार्च से 22 दिसंबर 2020 तक) एक से तीन घंटे की अवधि वाले तकरीबन 4380 सत्रों/वेबिनार/कार्यशालाओं आदि का आयोजन किया गया है। इन सत्रों में से लगभग 3996 में विषयगत मुद्दों पर ही चर्चा का फोकस रहा है। इन सत्रों में पूरे राज्य भर से 22050 शिक्षकों और ब्लॉक व जिला

स्तरीय अधिकारियों ने प्रतिभागिता की है। हाँ, इसमें से एक बड़ी संख्या प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों की रही है। इतनी विशाल संख्या एक बात तो साफ–साफ दर्शाती है कि शिक्षक अपने पेशे के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं और नित नया सीखने–समझने के लिए तैयार भी रहते हैं। इस दावे की पुष्टि इस तथ्य से भी होती है कि शिक्षकों की औसतन उपस्थिति लगभग पांच से छः बार की रही। यानि इन 22050 शिक्षकों की कुल उपस्थिति लगभग 121159 रही है। इस दौरान शिक्षकों ने न केवल इन सत्रों में भाग लिया है, उन्होंने बड़ी ही शिद्दत से इन सत्रों से जुडी गतिविधियों को, जो कि सत्र के उपरान्त करनी होती हैं, को भी समयबद्ध तरीके से पूरा करने के सराहनीय प्रयास किये हैं। जिसमें शामिल हैं– गणितीय संक्रियाओं को हल करना, बच्चों के लिए सवाल तैयार करना, कविता–कहानी आधारित शिक्षण की तैयारी कैसे करें, बिग–बुक का शिक्षण में इस्तेमाल, स्कूल योजना निर्माण आदि। बहुत से शिक्षकों ने अपनी अंग्रेजी में बच्चों के साथ संवाद करने और अंग्रेजी विषय की विषय–वस्तु पर विशेष फोकस किया है।

इस दौर में जब जन–जीवन को अस्त–व्यस्त कर देने वाली महामारी से हर कोई हैरान और परेशान हैं, हजारों शिक्षकों का यह जुनून कि वह अपनी कक्षा–कक्षीय जिम्मेदारियों के प्रति निरंतर सजग हैं और इसके लिए अपने आपको तैयार कर रहे हैं कि कैसे इस महामारी के चलते बच्चों की जिन भी दक्षताओं का ह्रास हुआ है उसकी भरपाई बेहतर तरीके से कर पायें।

वर्तमान में शिक्षकों का एक बहुत बड़ा हिस्सा अलग–अलग माध्यमों से अपने स्कूल के अधिकतर बच्चों से संपर्क में है और न केवल उनकी शैक्षिक जरूरतों में सहयोग कर रहा है वरन् उनकी आर्थिक, सामाजिक और स्वास्थ्य के प्रति भी अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर रहा है। हम सब इसे अपने आसपास अनुभव भी कर ही रहे हैं। अब जरूरत है हम (समुदाय और शिक्षा तंत्र) भी आगे आयें और शिक्षकों के इन प्रयासों का हिस्सा बनें और शिक्षकों के लिए सीखने–सिखाने के नए अवसर तलाशने के साथ उन्हें बच्चों के साथ फेस–टू–फेस संवाद करने और सीखने–सिखाने के प्रयासों में मदद करें जो कि बहुत शिक्षक अभी भी अपने व्यक्तिगत प्रयासों से कर ही रहे हैं।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, देहरादून से जुड़े हैं)

बड़े दिनों के बाद

- नागार्जुन

कई दिनों तक चूल्हा रोया,
चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया
सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर
छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी
हालत रही शिकस्त।

दाने आए घर के अंदर
कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर
कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की
आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें
कई दिनों के बाद।